रिकॉर्डः– इस पाप की दुनिया से... ओमशांति प्रातःक्लास 17/12/67
यह कौन कहते हैं और किनको कहते हैं? रूहानी बच्चे। बाबा बार–2 रूहानी बच्चे क्यों कहते हैं? क्योंकि अब आत्माओं को जाना है अपने घर। फिर जब इस दुनिया में आवेंगे तो सुख होगा। आत्माओं ने यह शांति और सुख का वर्सा कल्प पहले भी पाया था। अब फिर वो वर्सा रिपीट हो रहा है। रिपीट हो तो ही तो सृष्टि का चक्र फिर से रिपीट हो। रिपीट तो सब होता है ना। जो कुछ पास्ट हुआ है सो रिपीट होगा। यूँ तो नाटक भी रिपीट होता है; परन्तु उनमें तो चेंज भी कर सकते हैं। कोई अक्षर भूल जाता है तो बदली कर दूसरा भी डाल देते हैं। उसको फिर वाइसकोप कहा जाता है। इसमें तो चेंज नहीं कर सकते हैं। यह तो अनादि ही बना–बनाया है। उन नाटकों को तो बना–बनाया नहीं कहेंगे। इस ड्रामा को समझने से फिर उस ड्रामा की भी समझ आ जाती है। बच्चे समझते हैं कि यह जो भी नाटक आदि देखते हैं वो सब हैं झूठे। कलियुग में तो जो चीज़ देखी जाती है वो सतयुग में होगी ही नहीं। सतयुग में तो जो हुआ था सो फिर सतयुग में ही होगा। यह हद का नाटक आदि तो फिर भी भक्तिमार्ग में ही होंगे। जो चीज़ भक्तिमार्ग में होती है वो चीज़ ज्ञानमार्ग अर्थात् सतयुग में नहीं होती है। तो अब बेहद के बाप से तुम वर्सा पा रहे हो। बाबा ने तो एक मुरली में भी चलाया था कि एक (तो) लौकिक बाप से और एक पारलौकिक बाप से ही वर्सा मिलता है। बाकी तो जो आलौकिक बाप है उनसे वर्सा नहीं मिलता है। यह खुद भी उनसे ही वर्सा (पाते) हैं। यह जो प्रोपर्टी है नई दुनिया, वो बेहद का बाप ही देते हैं सिर्फ इन द्वारा। इनसे ही एडॉप्ट करते हैं इसलिए ही इनको बाप कहते हैं। भक्तिमार्ग में भी लौकिक और पारलौकिक दोनों ही याद आते हैं। यह (आलौकिक) याद नहीं आता है; क्योंकि इनसे तो कोई भी वर्सा मिलता ही नहीं है। बाप अक्षर तो बरोबर है; परन्तु यह ब्रह्मा भी तो रचना (ही) तो है ना। रचना को रचता से वर्सा मिलता है। तुमको भी तो शिवबाबा ने ही क्रियेट किया है। ब्रह्मा को भी उसने ही क्रियेट किया है। वर्सा क्रियेटर से मिलता है। वो है बेहद का बाप। ब्रह्मा के पास बेहद का वर्सा है क्या? बाप इन द्वारा बैठ समझाते हैं। इनको भी वर्सा मिलता है। ऐसे नहीं कि वर्सा यह लेकर फिर तुमको देते हैं। नहीं। बाप कहते हैं कि तुम इनको भी याद नहीं करो। यह बेहद के बाप से तुमको भी प्रोपर्टी मिलती है। लौकिक बाप से हद का, पारलौकिक बाप से बेहद का वर्सा मिलता है। दोनों का वर्सा रिजर्व हो गया। इनसे तो कुछ मिलता नहीं है। भल तुम ...को बाबा कहते हो। अच्छा, बाबा से क्या मिलता है? शिवबाबा से तो वर्सा मिलता ही है। बुद्धि में आता है। बाकी ब्रह्मा बाबा से मिला वर्सा क्या कहेंगे? बुद्धि में जागीर आती है ना। यह बेहद की बादशाही तुमको उनसे ही मिलती है। वो तो है बड़ा बाबा। यह तो कहते हैं कि मुझे याद नहीं करो। मेरे पास तो कोई भी प्रोपर्टी है ही नहीं जो कि तुमको मिले। जिनसे ही प्रोपर्टी मिलनी है उनको ही याद करो। वो ही कहते हैं कि माम् एकम् याद करो। लौकिक बाप की प्रोपर्टी पर तो कितना झगड़ा भी चलता है। यहाँ पर तो झगड़े की बात ही नहीं है। बाप को याद नहीं करेंगे तो ऑटोमैटिकली ही बेहद का वर्सा नहीं मिलेगा। बाप कहते हैं कि अपने को आत्मा समझो। अपने रथ को भी कहते हैं कि तुम अपने को आत्मा समझ मुझको याद करो तो ही तुमको भी विश्व की बादशाही मिलेगी। इसको ही कहा जाता है कि याद की यात्रा। देह के सब संबंधों को छोड़ कर अपने को देही समझना है। इसमें ही मेहनत है। पढ़ाई के लिए कोई ना कोई तो मेहनत भी होनी ही चाहिए ना। इस याद की ही यात्रा से तुम पतित से पावन बनते हो। वो यात्रा तो करते ही हैं शरीर से। यह तो है आत्मा की यात्रा। यह तो तुम्हारी आत्मा है परमधाम में जाने की। परमधाम अथवा मुक्तिधाम कोई भी जा नहीं सकते हैं सिवाय इस पुरुषार्थ के। जो अच्छी रीति याद करते हैं वो ही जा भी सकते हैं और फिर वो ही ऊँच पद भी पा ही सकते हैं। जायेंगे तो सभी; परन्तु वो ... पतित हैं ना। इसलिए ही पुकारते हैं। आत्मा ही याद करती है। खाती–पीती, सब कुछ आत्मा करती है ना।

इस समय तो तुमको देही–अभिमानी बनना है। यही मेहनत है। बिगर मेहनत तो कुछ मिलता ... नहीं है। है भी बहुत सहज; परन्तु माया का अपोजिशन होता है। किनकी तकदीर अच्छी है तो झट इसमें लग जावेंगे। कोई तो फिर देरी से भी आवेंगे। अगर बुद्धि में ठीक रीति बैठ गया तो कहेंगे कि बस अब तो (यह) धंधा आदि छोड़कर बैठ तपस्या करते हैं। तुम तो राज–ऋषि हो ना। यह तो तुम्हारी तपस्या ही है सहज राजयोग की। इसके लिए तो कहीं पर भी जाने वा भटकने की दरकार ही नहीं है। कहेंगे, बस अब तो मैं इस रूहानी यात्रा में ही लग जाता हूँ। ऐसे ही तीव्र वेग से लग जावे तो अच्छी ही दौड़ी पहन सकते हैं। घर में रहते हुए भी बुद्धि में आ जावेगा। यह तो बहुत ही अच्छी राइट बातें हैं। मैं तो अपने को आत्मा समझ कर पतित–पावन बाप को याद करता हूँ। बाप के ही फरमान पर चले तो पावन बन सकते हैं। बनेंगे भी ज़रूर। पुरुषार्थ करने की ही बात है; परन्तु है तो बहुत ही सहज। भक्तिमार्ग में तो बहुत ही डिफीकल्टी होती है। यहाँ पर तो तुम्हारी बुद्धि में है कि अब हमको तो वापस बाबा पास जा(ना) है। फिर यहाँ पर आकर विष्णु की माला में पिरोये जाना है। माला का हिसाब करे तो माला तो ब्रह्मा की भी है। रुद्र की भी है। पहली–2 नई सृष्टि की तो यह है ना। बाकी तो सभी पीछे ही आते हैं। गोया पिछाड़ी में पिरवोने हैं। कहेंगे, तुम्हारा ऊँच कुल क्या है? हम असल में तो विष्णु कुल के थे, फिर क्षत्रिय कुल के बने। फिर इससे ही बिरादरियाँ निकलती हैं। इस नॉलेज ही से तुम समझते हो कि बिरादरियाँ कैसे बनती हैं। पहले तो रुद्र की माला बनती है। ऊँच ते ऊँच बिरादरियाँ हैं। बाप ने समझाया है कि यह तुम्हारा बहुत ऊँच ते ऊँच कुल है। यह भी बच्चे समझते हैं कि सारी दुनिया को पैगाम तो ज़रूर ही मिलेगा। जैसे कि अरविंद घोष की माई कहती है कि भगवन तो ज़रूर कहीं पर आया हुआ है; परन्तु पता नहीं पड़ता है। आख(रीन) पता तो सभी को ही लगेगा। अख़बारों में भी पड़ता जावेगा। अब तो थोड़ा डालते हैं। ऐसे नहीं है कि एक ही अख़बार सब पढ़ते हैं। लाइब्रेरी में पढ़ सकते हैं। कोई तो दो/चार भी पढ़ते हैं। कोई तो बिल्कुल भी नहीं पढ़ते हैं। यह भी सबको पता तो रहता ही है कि बाबा आया हुआ है। विनाश का समय नजदीक होगा तो पता पड़ेगा। नई दुनिया की स्थापना, पुरानी दुनिया का विनाश होता है। हो सकता है बहुतों को सा० भी हो। सन्यासियों को, राजाओं आदि बहुतों को ज्ञान तुमको देना है। बहुतों को पैगाम मिलना है। जब (सुनेंगे) बेहद का बाप आया है, वह ही सद्गति देने वाला है तो बहुत आवेंगे। अभी अख़बार में दिलपसंद कायदे मुजिम निकला न है। कोई निकल भी पड़ेंगे। पूछताछ करेंगे। बच्चे समझते हैं श्रीमत पर हम सतयुग की स्थापना कर रहे हैं। तुम्हारी यह नई मिशन है। तुम हो ईश्वरीय मिशन के नई भाती। जैसे क्रिश्चियन मिशन के क्रिश्चियन भाती बन जाते हैं। तुम हो ईश्वरीय भाती। इसलिए गायन है अति इन्द्रिय सुख गोप–गोपियों से पूछो जो आत्माभिमानी बने हैं। एक बाप को ही याद करना है, दूसरा न कोई। गायन तो है ना। भारत का (प्राचीन) राजयोग भी गाया हुआ है। इनसे ही बाप ने नई दुनिया की स्थापना की। उनको हम जानने चाहते हैं। .....टच होगा। समझाने वाला भी प्रवीण हो। यह राजयोग एक बाप ही सिखलाते हैं। वही गीता का भगवान है। सभी को यही बाप का निमंत्रण वा पैगाम देना है। बाकी सभी बातें हैं ज्ञान का श्रृंगार, न कि भक्ति का। यह बाप ने बैठ बनवाया है मनुष्यों को समझाने लिए। यह चित्र आदि तो प्रायःलोप हो जावेंगे। बाकी यह ज्ञान आत्मा में रह जाता है। बाप को भी यह ज्ञान है। ड्रामा में नूँध है। अभी तुम भक्तिमार्ग पास कर ज्ञानमार्ग में (आए) हो। तुम जानते हो हमारी आत्मा में यह पार्ट है जो चल रहा है। नूँध थी जो फिर से हम राजयोग सीख रहे हैं बाप से। बाप को ही आए यह नॉलेज देनी थी। यह भी अभी तुम ही समझते हो आत्मा में नूँध है। वहाँ जाए पहुँचेंगे फिर नई दुनिया का पार्ट रिपीट होगा। आत्मा के सारी रिकॉर्ड का अभी तुम समझ गए हो शुरू से लेकर। फिर यह सब बंद हो जावेंगे। भक्तिमार्ग का पार्ट भी बंद हो जावेगा। फिर जो तुम्हारी एक्ट सतयुग में चली होगी वही चलेगी। क्या होगा यह बाप नहीं बताते हैं। जो हुआ होगा

वह ही होगा। समझा जाता है सतयुग है नई दुनिया। ज़रूर वहाँ सब कुछ नया और सतोप्रधान ..... होगा। जो कुछ कल्प पहले हुआ था वह ही होगा। देखते भी हैं इन ल०ना० को कितने सुख हैं। हीरे–जवाहर आदि धन बहुत है। धन है तो सुख भी है। यहाँ तुम भेंट कर सकते हो। वहाँ नहीं कर सकेंगे। यहाँ की बातें वहाँ सब भूल जावेंगे। यह है नई बात जो बाप ही बैठ बच्चों को समझाते हैं। आत्माओं से बात करते हैं। शरीर का नाम पड़ने से फिर उस पर ही कारोबार चलती है। अभी तो तुम आत्माओं को (वहाँ) जाना है जहाँ सारे कारोबार बंद होती हैं। हिसाब–किताब सब चुक्तू होता है। रिकॉर्ड पूरा होता है। एक ही रिकॉर्ड बहुत बड़ा है। कहेंगे, फिर तो आत्मा भी इतनी बड़ी होनी चाहिए; परन्तु नहीं, इतनी छोटी आत्मा में इतना बड़ा रिकॉर्ड भरा हुआ है। यह ही वण्डर है। यह बातें अभी तुम ही सुनते हो। और कोई सुनाए न सके। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का पार्ट है। आत्मा भी अविनाशी है। इसको वण्डर ही सिर्फ कहेंगे। ऐसी आश्चर्यवत् चीज़ कोई हो न सके। बाबा के लिए तो कहेंगे सतयुग–त्रेता का समय विश्रामपुरी में रहते हैं। हम तो ऑलराउंड पार्ट बजाते हैं। सबसे जास्ती हमारा पार्ट है। तो बाप वर्सा भी ऊँचा देते हैं। कहते हैं 84 जन्म भी तुम ही लेते हो। हमारा तो पार्ट फिर ऐसा है जो कोई बजा न सके। वण्डरफुल बातें हैं ना। यह भी वण्डर है जो आत्माओं को बाप बैठ समझते(समझाते) हैं। आत्मा मेल–फिमेल नहीं है। जब शरीर धारण करती है तो मेल–फिमेल कहा जाता है। आत्माएँ सभी बच्चे हैं तो भाई–2 कहा जाता है। भाई–2 हैं ज़रूर वर्सा पाने लिए। आत्मा बाप का बच्चा है ना। वर्सा लेते हैं बाप से। इसलिए मेल ही कहेंगे। सभी आत्माओं का हक है बाप से वर्सा लेने का। इसके लिए बाप को याद करना है। अपन को आत्मा समझना है। हम सभी ब्रदर्स हैं। आत्मा मेल ही है। वह कब बदलती नहीं। बाकी शरीर कब मेल का, कब फिमेल का लेती है। आत्मा को वर्सा मिलता है बाप से। इसलिए आत्मा को मेल ही कहेंगे। यह बड़ी अटपटी बातें समझने की हैं। और कोई कब सुना न सके। बाप से या तुम बच्चों से ही सुन सकते हैं। बाप तो तुम बच्चों से ही बात करते हैं। आगे तो सबसे मिलते थे। सबसे बात करते थे। अब कमती करते–2 आखरीन तो कोई से बात नहीं करेंगे। सन शोज़ फादर है ना। बच्चों को ही (पढ़ाना) है। तुम बच्चे ही बहुतों की सर्विस करते हो। बाप समझते हैं यह बहुतों को आप समान बना कर ले आते हैं। यह बड़ा राजा बनेंगे। यह छोटा राजा। यह प्रजा बनेंगे। सेना भी तुम हो, जो सबको रावण के जंजीरों से छुड़ाकर अपने मिशन में ले आते हो। जितना जो सर्विस करते हैं उतना फल मिलता है। जिसने जो जास्ती भक्ति की है वही जास्ती होशियार हो जाते हैं और वर्सा लेते हैं। मालूम पड़ता जाता है। फाइनल जब होगी तब ....। इसको फिर कहा जाता है भावी। कोई बीमार हो पड़ते हैं जो पढ़ते नहीं है। यह भी पढ़ाई है। अच्छी रीत पढ़ाई न की तो फेल हो जावेंगे। पढ़ाई बहुत सहज है। समझना और फिर समझाना भी है। डिफीकल्प की कोई बात नहीं; परन्तु राजधानी स्थापन होनी है। उसमें तो सब चाहिए ना। पुरुषार्थ करना है इसमें हम ऊँच पद पावें। मृत्युलोक से ट्रांसफर होकर अमरलोक में जाना है। जितना पढ़ेंगे उतना ऊँच पर पावेंगे। सारा पढ़ाई पर ही जोर है। याद की यात्रा और पढ़ाई। पढ़ेंगे–लिखेंगे तो बड़ा पद पावेंगे। बाप को प्यार भी करना होता है; क्योंकि यह तो बहुत प्यारे ते प्यारे वस्तु है। प्यार का सागर भी है। बच्चों को प्यार करते हैं। (उनको) लायक बनाते हैं। वर्सा तो सबको पाना है। इसलिए नम्बरवार प्यार करते हैं। एकरस (प्यार हो) ही न सके। कोई याद करते हैं, कोई नहीं करते हैं। किसको समझाने का भी नशा रहता है। यह बड़ा टेम्पटेशन है। कोई को भी बताना है यह यूनिवर्सिटी है। यह स्प्रीच्युअल पढ़ाई है। ऐसी चित्र और कोई स्कूल में नहीं दिखाई जाती। दिन–प्रतिदिन बनते ही रहेंगे। बाबा को ख्याल आ रहा था ऐसे चित्र बनावे जो मनुष्य देखने से ही समझ जावे। सीढ़ी बहुत अच्छी है। बाकी देवता धर्म का न होगा तो वह नहीं समझेंगे। अपने कुल का .....। देवी–देवता धर्म के पत्ते होंगे वही आवेंगे। तुमको फील होगा यह तो बहुत रुचि से सुन रहा है। कोई तो चले भी जावेंगे। जिसने अच्छी भक्ति की होगी वह दिमाग से सुनेंगे; क्योंकि उनको ही पहले जाना होगा। अच्छा, ओम।